SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) :2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 4, Issue-1, January to March : 2026
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

हिन्दी भाषा में भारतीय ज्ञान परंपरा का निरुपण : एक परिदृश्य

डॉ. एन. ओ. भालिया
आसिस्टन्ट प्रोफेसर-हिन्दी विभाग,
सरकारी विनयन कॉलेज, तलाजा।
जिला-भावनगर।(गुजरात)

Abstract: -

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम परंपराओं में से एक है। वह भारत की विविध भाषा के साथ हिन्दी भाषा साहित्य में सरंक्षित है। हिन्दी भाषा ने भारतीय सभ्यता के मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धांतों के साथ ज्ञान के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विश्लेषण को वाणी दी है। उसकी ज्ञान वहन क्षमता को हिन्दी भाषा के उद्भव-विकास : वैदिक संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से लेकर आधुनिक खड़ी बोली में निरुपित है।

प्रारंभ में स्मृति और श्रुति के माध्यम से मौखिक रुप से ही ज्ञान का संवहन होता था। लेखन कला के विकास के साथ पांडुलिपियों ने इस परंपरा को स्थायी बनाया। बाद में ताड़पत्र, भोजपत्र और हस्तनिर्मित कागज़ पर वैदिक साहित्य, आयुर्वेद आदि का संरक्षण हुआ। देवनागरी लिपि के आविष्कार एवं मानकीकरण ने ग्रंथ लेखन और प्रतिलिपियों के निर्माण को ओर सुव्यवस्थित करके ज्ञान संरक्षण को स्थायी और प्रामाणिक बनाया है।

मध्यकालीन भक्ति साहित्य में तुलसीदास कृत ' रामचरित मानस ' जैसी कृतियों के साथ कबीर, सूरदास आदि ने धार्मिक एवं नैतिक ज्ञान को लोक भाषा में जन-सामान्य तक पहुँचाकर उसे सरंक्षित किया है। आधुनिक काल में भी उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने ' गोदान ' जैसी रचनाओं के साथ रेणु, कमलेश्वर, मनुभंडारी, उषा प्रियंवदा आदि ने सामाजिक यथार्थ और आदर्श को वाणी देने का सफल प्रयास किया है।

प्रेस-मुद्रण कला के आविष्कार से हिन्दी में समाचार पत्र, पत्रिकाओं और पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान सीमित वर्ग से निकलकर आम आदमी तक पहुँचा है। स्वतंत्रता के समय राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में हिन्दी ने वैचारिक एकता और सांस्कृतिक संवाद को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आधुनिक युग में डिजिटल तकनीक से ज्ञान के संरक्षण को नई दिशा मिली है। ई-पुस्तकों का प्रकाशन और ऑनलाइन से कई दुर्लभ ग्रंथों को वैश्विक स्तर पर सुलभ बनाया है और शोध को भी प्रोत्साहन देकर आनेवाली कई पीढ़ियों के लिए ज्ञान सुरक्षित किया है। निःसंदेह रुप से हिन्दी भाषा भारतीय ज्ञान परंपरा के सरंक्षण की धरोहर एवं आधारशिला मानी जाती है।

- प्रस्तावना : -

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास समृध्ध और गौरवमयी रहा है। मानव सभ्यता के विकास का आधार भी ज्ञान है और ज्ञान की निरंतरता का आधार भाषा तथा उसके संरक्षण के साधन होते है। यदि भाषा न होती तो अनुभव, विचार, शोध, दर्शन और संस्कृति पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित नहीं रह सकते थे। भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम ज्ञान

परंपराओं में से एक सुप्रसिध्ध ज्ञान परंपरा है। यह ज्ञान परंपरा अनादिकाल से भारतीय समाज, संस्कृति, दर्शन और साहित्य को प्रभावित कर भारत की विभिन्न भाषाओं में निरुपित एवं सुरक्षित है। हिन्दी भाषा न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि ज्ञान के संरक्षण और प्रसार का महत्त्वपूर्ण साधन हैं। यह ज्ञान परंपरा हिन्दी भाषा के उद्भव-विकास : वैदिक संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से लेकर आधुनिक खड़ी बोली हिन्दी में निरुपित और संरक्षित है। हिन्दी भाषा में प्राचीन भारतीय सभ्यता के मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धांतों को ज्ञान के साथ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विश्लेषण को वाणी मिली है।

- हिन्दी भाषा का उद्भव-विकास और भारतीय ज्ञान परंपरा का निरुपण :-

कोई भी भाषा मात्र संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि ज्ञान की संरचना और विकास का सफल माध्यम होता है। हिन्दी भाषा का उद्भव वैदिक संस्कृत से होकर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से हुआ है। हिन्दी भाषा का लेखन मुख्यतः देवनागरी लिपि में होता है। देवनागरी की ध्वन्यात्मक संरचना और स्पष्टता ने ज्ञान-संरक्षण को सुदृढ़ किया हैं। देवनागरी का मानकीकरण होने से ग्रंथों की प्रतिलिपि बनाना और उन्हें संरक्षित रखना सरल हुआ है। हिन्दी साहित्य हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा का आधुनिक और लोकाभिमुख का दर्पण है। हिन्दी साहित्य ने संस्कृत, पालि और प्राकृत में निरुपित दार्शनिक ज्ञान को जनभाषा में रूपांतरित कर व्यापक समाज तक पहुँचाया है। आदिकाल और भक्तिकाल से लेकर आज तक हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयाम स्पष्टतः नजर आते हैं। हिन्दी ने शिक्षा, साहित्य, पत्रकारिता, विज्ञान, प्रशासन और जनसंचार आदि के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जब किसी भाषा में ज्ञान-साहित्य उपलब्ध होता है तो वह समाज के बौद्धिक विकास को गति देता है। हिन्दी में दर्शन, इतिहास, समाजशास्त्र, विज्ञान और तकनीक से संबंधित पुस्तकों का अनुवाद और लेखन निरंतर-अविरत गति से बढ़ा है। फलतः ज्ञान केवल अभिजात वर्ग तक सीमित न रहकर व्यापक समाज तक पहुँचा है, यही हिन्दी की उपलब्धि मानी जाती है। हमारा अध्ययन आदिकाल से आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य में निरुपित हमारी ज्ञान परंपरा पर प्रकाश डालना हैं।

- आदिकालीन हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा :-

हिन्दी के आदिकाल का समय 8वीं से14वीं शती तका रहा है। उस काल में वैदिक दर्शन, उपनिषद, पुराण, योग और जैन-बौद्ध धर्म के शाश्वत मूल्य भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार स्थंभ रहा था। आदिकाल में दरबारी कवियों ने रासों काव्यों में और सिद्ध, नाथ एवं जैन कवियों ने नीति, साधना, दार्शनिक ज्ञान, आत्मा-परमात्मा का संबंध और लोक मंगल की भावना को हिन्दी के माध्यम से आम जनता तक पहुंचाया है।

आदिकाल में स्वयंभू जैसे कवि ने पौराणिक कथाओं को रामकथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है साथ ही सिद्ध और अन्य जैन कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से धर्म, नैतिकता और सदाचार का प्रसार किया है। गुरु गोरखनाथ ने हठ योग और दार्शनिक ज्ञान तथा सिद्धों की वाणी में अद्वैतवाद, साधना और आत्मा-परमात्मा के मिलन, मुल्ला दाउद ने ' चंदायन ' में अलौकिक प्रेम को निरुपित किया है। निःसंदेह रुप से आदिकाल ज्ञान के क्षेत्र में एक संधिकाल था, पर उसमें प्राचीन भारतीय मूल्य और नए सांस्कृतिक प्रभाव को निरुपित किया हैं।

- भक्तीकालीन हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा :-

भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का सुवर्णयुग माना गया है। भक्तिकाल में वेद, उपनिषद, गीता, पुराण आदि के तत्वों को निर्गुण-सगुण, ज्ञान-सूफी संत कवियों ने सरल लोक भाषाओं में चित्रित किया है। सगुण कवियों में तुलसीदास, सूरदास आदि संत कवियों ने श्रीमद्भगवद गीता और रामायण के भक्तिमार्ग और कबीर, नानक आदि निर्गुण संत कवियों ने उपनिषद के अद्वेतवाद एवं ज्ञान को प्रेम के साथ मिलाकर प्रस्तुत किया है।

कबीर हिन्दी साहित्य में निर्गुण भक्ति और ज्ञानमार्ग के प्रमुख कवि है। उन्होंने आत्मानुभूति को ज्ञान का आधार माना है। भक्ति काव्य केवल भक्ति के गीत नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करनेवाला एक व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन था। कबीर के पद :

" पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाइ अक्षर प्रेम का पढे सो पंडित होय। " १

अर्थात् कबीर शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभूत सत्य को अधिक महत्व देते हैं। निश्चय ही उनका काव्य उपनिषदों की ज्ञान परंपरा को लोकभाषा में निरुपित करता है। तुलसीदास कृत ' रामचरितमानस ' भारतीय सांस्कृतिक चेतना का मूलाधार है। जिसमें धर्म, मर्यादा, आदर्श शासन और लोकमंगल की अवधारणा पायी जाती है।

" परहित सरिस धरम नहि भाई।
पर पीडा सम नहिं अधमाई॥ " २

उपर्युक्त पंक्तियों में तुलसीदास ने लोकमंगल को सर्वोच्च धर्म के रूप में स्थापित किया है। तुलसीदास ने अपने समग्र साहित्य में वेदांत और भक्ति को अवधी भाषा में प्रस्तुत करते हुए ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाया है। उनके साहित्य में ज्ञान, कर्म और भक्ति का अद्भूत समन्वय पाया जाता हैं। मीरांबाइ का भक्ति भाव आत्म समर्पण और सूरदास की रचनाएं कृष्ण भक्ति पर आधारित है जिसमें भक्तियोग एवं प्रेम मार्ग को अभिव्यक्त किया हैं।

समग्रतः भक्तिकाल के सभी भक्त और संत कवि ने संयमित जीवन पर बल दिया है। अतः कह सकते है कि भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा की सर्वोत्तम उपलब्धि हैं। " भारतीय ज्ञान परंपरा एक दिव्य प्रकाशपुंज के समान है, जिसकी आभा भक्तिकाव्य में निखरकर लोकचेतना को आलोकित करती हैं। वेदों की गंभीरता, उपनिषदों की रहस्यात्मकता और पुराणों की सांस्कृतिक गरीमा जब संत कवियों की वाणी में प्रवाहित हुई तो भक्ति काव्य प्रेम, भक्ति और ज्ञान का सजीव संगम बन गया। " ३ निश्चित रुप से कह सकते है कि भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा चर्मोत्कर्ष हैं।

- रीतिकालीन हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा :-

रीतिकाल में हमारी ज्ञान परंपरा केवल आध्यात्मिक न रहकर कलात्मक और सौंदर्यपरक भी बनी हैं। रीतिकाल में भारतीय ज्ञान परंपरा का निरुपण संस्कृत के काव्यशास्त्र, लक्षणग्रंथों, रस सिद्धांत और पौराणिक आख्यानों के माध्यम से हुआ हैं। केशवदास की 'रसिकप्रिया' भारतीय काव्यशास्त्रीय परंपरा का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें रस, अलंकार और नायिका-भेद का निरुपण पाया जाता है। वृंद, गिरधर जैसे कवियों ने नीतिपरक रचनाएं लिखकर ज्ञान परंपरा को आगे बढाया हैं। बिहारी के दोहों में लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम को बताकर भारतीय ज्ञान परंपरा का सरोकार किया हैं। रीतिकाल में भारतीय ज्ञान परंपरा ने सामंती संस्कृति और विलासी परिवेश के बावजूद अपनी एक अलग पहचान कायम की हैं। भक्तिकालीन हिन्दी काव्य विशेषतः संत साहित्य और रीतिकालीन काव्य, जो प्रारंभ में पांडुलिपि में ही उपलब्ध था, एसी अनेक कृतियाँ समय के साथ नष्ट हो गईं, परंतु जो सुरक्षित रहीं है वह आज हमारे साहित्यिक इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं।

- आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा :-

आधुनिक युग में डिजिटल तकनीक से ज्ञान के संरक्षण को नई दिशा मिली है। ई-पुस्तकों का प्रकाशन और ऑनलाइन से कईं दुर्लभ ग्रंथों को वैश्विक स्तर पर सुलभ बनाया है और शोध को भी प्रोत्साहन देकर आनेवाली कईं पीढ़ियों के लिए ज्ञान सुरक्षित किया है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में कविता, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं में भारतीय ज्ञान परंपरा का निर्वाह अच्छी तरह से हो पाया हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिन्दी साहित्य को राष्ट्रीय जागरण से जोड़ा है। उनके ' भारत दुर्दशा ', ' अंधेर नगरी ' आदि नाटक में सामाजिक और राजनीतिक पतन का चित्रण करता है।

" जहाँ न धर्म न बुद्धि नहिं, नीति न सुजन समाज।
ते एसेहि आपुहि नसे, जैसे चौपटराज। " ४

उपर्युक्त पंक्तियों में भारतेंदु हिन्दी समाज में राजनीतिक और सामाजिक सुधार को व्यक्त करते हैं।

धर्मवीर भारती का ' अंधा युग ' महाभारत की पृष्ठभूमि पर आधारित नाटक है जिसमें युध्ध, हिंसा, नैतिक संकट और कर्म फल का चित्रण है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा के 'धर्म-अधर्म' के द्वंद्व को आधुनिक संदर्भ में निरुपित करता हैं। मोहन राकेश के ' आषाढ का एक दिन ' में आत्म संघर्ष, वैराग्य, कर्तव्य, पीडा के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा का मनोवैज्ञानिक रुप है और ' लहरों के राजहंस ' में बुद्धकालीन वैराग्य और मोक्ष की अवधारणा प्रस्तुत हैं।

जयशंकर प्रसाद के महाकाव्य ' कामायनी ' में मानव मन, श्रद्धा और ज्ञान के प्रतीकात्मक चित्रण के साथ भारतीय समन्वयवादी दर्शन को निरुपित किया हैं। उन्होंने 'मनु' और 'श्रद्धा' के माध्यम से ज्ञान और भावना का संतुलन प्रस्तुत किया है। महादेवी वर्मा की कविताओं में आत्मानुभूति और करुणा का गहरा स्वर है साथ ही आत्मा की पीड़ा, रहस्यानुभूति और आध्यात्मिकता एवं इश्वर की खोज दिखाई देती है। रामधारी सिंह 'दिनकर' की ' रश्मिरथी ' में कर्ण का चरित्र त्याग और आत्मगौरव का प्रतीक है और ' संस्कृति के चार अध्याय ' रचना में भारतीय संस्कृति और इतिहास के साथ शक्ति, नैतिकता और सांस्कृतिक गौरव का समन्वय करते हुए सांस्कृतिक गौरव को काव्य में स्वर दिया हैं।

आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य में उपन्यास का मुख्य स्वर सामाजिक रहा है। हिन्दी का पहला उपन्यास ' परीक्षा गुरु ' भारतीय समाज के यथार्थ का उद्घाटन करता हुआ पुनर्जागरण और मूल्य को चित्रित करता है। उसी परंपरा में आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य में प्रेमचंद ने अपनी कहानी, उपन्यास साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया हैं। उनका ' गोदान ' उपन्यास भारतीय ग्रामीण जीवन की समस्याओं और नैतिक संघर्ष को प्रस्तुत करता है। ' गोदान ' में होरी का चरित्र धर्म और जीवन- संघर्ष के द्वंद्व को प्रस्तुत करता है। यह भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक आदर्शों और यथार्थ के संघर्ष को दर्शाता है। रामविलास शर्मा लिखते है कि " प्रेमचंद भारत की नई राष्ट्रीय और जनवादी चेतना के प्रतिनिधि साहित्यकार थे। अपने युग और समाज का जो यथार्थ चित्रण उन्होंने किया, वह अद्वितीय हैं। " ५

स्वतंत्रता के बाद फणीश्वरनाथ 'रेणु' के ' मैला आंचल ' उपन्यास हिन्दी में पहली बार किसी अंचल विशेष के उपेक्षित जीवन की छवि और कुरुपता, राजनीतिक दासता आदि का सुक्ष्मता से बताया हैं। जिनके बारे में रामदरश मिश्र लिखते है कि " 'मैला आंचल' में अंचल विशेष की कथा ही नहीं कही है बल्कि अपनी सशक्त व्यंग्य शैली से कथा को इस प्रकार नियोजित किया है कि समस्त अंचल सजीव होने के साथ-साथ समस्त जीवन के सौंदर्य-असौंदर्य, सद्-असद् की ओर बडी ही सूक्ष्मता से संकेत करता हैं।" ६ उसी प्रकार भगवतीचरण वर्मा ने ' चित्रलेखा ' में पाप पुण्य की शाश्वत समस्या को निरुपित करते हैं।

वर्तमान शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं में विशेषकर हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देने पर बल दिया गया है। हिन्दी में वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष और भारतीय गणित के अध्ययन से छात्र अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ सकते हैं।

आधुनिक युग में डिजिटल तकनीक से ज्ञान के संरक्षण को नई दिशा मिली है। ई-पुस्तकों का प्रकाशन और ऑनलाइन से कईं दुर्लभ ग्रंथों को वैश्विक स्तर पर सुलभ बनाया है और शोध को भी प्रोत्साहन देकर आनेवाली कईं पीढ़ियों के लिए ज्ञान सुरक्षित किया है। निःसंदेह रुप से हिन्दी भाषा भारतीय ज्ञान परंपरा के सरंक्षण की धरोहर एवं आधारशिला मानी जाती है।

- निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का जीवंत, गतिशील और बहुआयामी स्वरूप है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य मानव जीवन को सम्यक दिशा प्रदान करना है जो हिन्दी साहित्य में बखूबी चित्रित किया गया है। हिन्दी साहित्य में आध्यात्मिकता, नैतिकता, सामाजिक सुधार, राष्ट्रवाद और मानवतावाद का अद्भुत समन्वय विद्यमान है। आदिकाल और भक्तिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिन्दी साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा को जन-जन तक पहुँचाया और उसे समयानुकूल नए रूप भी प्रदान किया हैं। अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा का सशक्त संवाहक और संरक्षक है। अंततः निःसंदेह रुप से हिन्दी साहित्य में निरुपित भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर न रहकर भविष्य की दिशा भी बन सका है।

- संदर्भ :-

- डॉ. तृप्ति उकास। International Journal of Creative Research Thoughts, भारतीय ज्ञान परंपरा और साहित्य
- डॉ. धर्मेंद्र कुमार शर्मा। International Journal of Hindi Research, भक्ति काव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा
- वही " " "

- अंधेर नगरी, भारतेंदु हरिश्चंद्र।
- प्रेमचंद और उनका साहित्य, रामविलास शर्मा।
- हिन्दी उपन्यास एक अंतर्यात्रा, रामदरश मिश्र।